

## विषय-परिचय

< इस खण्डका नाम 'बन्धस्वामित्व-विचय' है, जिसका अर्थ है बंधके स्वामित्वका विचय अर्थात् विचारणा, मीमांसा या परीक्षा । तदनुसार यहां यह विवेचन किया गया है कि कौनसा कर्मबंध किस किस गुणस्थानमें व मार्गणास्थानमें सम्भव है । इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है -- >

< कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें छठवें अनुयोगद्वारका नाम बंधन है । बंधनके चार भेद हैं- बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान । बन्धविधान चार प्रकारका है- प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश । इनमें प्रकृतिबंध दो प्रकारका है--- मूल प्रकृतिबंध और उत्तर प्रकृतिबंध । सत्प्ररुपणा पृष्ठ १२७ के अनुसार प्रकृतिबंध भी दो प्रकारका है, एकैकोत्तरप्रकृतिबंध और अब्बोगाढउत्तरप्रकृतिबंध । एकैकोत्तरप्रकृतिबंधके समुत्कीर्तनादि चौबीस अनुयोगद्वार हैं जिनमें बारहवां अनुयोगद्वार 'बन्धस्वामित्व-विचय' है । >

< इस खण्डमें ३२४ सूत्र है । प्रथम ४२ सूत्रोंमें ओघ अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्ररुपण है, और शेष सूत्रोंमें आदेश अर्थात् मार्गणानुसार गुणस्थानोंका प्ररुपण किया गया है । सूत्रोंमें प्रश्नोत्तर क्रमसे केवल यह बतलाया गया है कि कौन कौन प्रकृतियां किन किन गुणस्थानोंमें बन्धको प्राप्त होती हैं । किन्तु धवलाकारने सूत्रोंको देशामर्शक मानकर बन्धव्युच्छेद आदि सम्बन्धी तेवीस प्रश्न और उठाये हैं और उनका समाधान करके बन्धोदयव्युच्छेद स्वोदय-परोदय, सान्तर-निरन्तर, सप्रत्यय-अप्रत्यय, गति-संयोग व गति-स्वामित्व, बन्धाघ्वान, बंध-व्युच्छित्तिस्थान, सादिं अनादिं व ध्रुव अध्रुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पष्टीकरण कर दिया है, जिससे विषय सर्वांगपूर्ण प्ररुपित हो गया है । इस प्ररुपणाकी कुछ विशेष व्यवस्थायें इस प्रकार हैं -- >

'सान्तरबन्धी'--< एक समय बंधकर द्वितीय समयमें जिनका बन्ध विश्रान्त हो जाता है वे सान्तरबन्धी प्रकृतियां है । वे ३४ हैं -- असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरतिं, शोक, नरकगति, एकेन्द्रियादि ४ जाति, समचतुरस्रसंस्थानको छोड़ शेष ५ संस्थान, वज्रर्षभनाराच-संहननको छोड़ शेष ५ संहनन, नरकगत्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति । >

षट्खण्डागमकी प्रस्तावना

‘निरन्तरबन्धी’->< जो प्रकृतियां जघन्यसे भी अन्तर्मुहूर्त काल तक निरन्तर रूपसे बंधती हैं वे निरन्तरबन्धी हैं । वे ५४ हैं--- ध्रुवबन्धी ४७ (देखिये पृ. ३ ), आयु ४, तीर्थकर, आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग ।

‘सान्तर-निरन्तरबन्धी’->< जो जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः एक समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तके आगे भी बन्धती रहती हैं वे सान्तर-निरन्तरबन्धी प्रकृतियां हैं । वे ३२ हैं-- सातावेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक-शरीर, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभ-संहनन, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकिर्ति, नीचगोत्र और ऊंचगोत्र ।

‘गतिसंयुक्त’->< प्रश्नके उत्तरमें यह बतलाया गया है कि विवक्षित प्रकृतिके बन्धके साथ चार गतियोंमें कौनसी गतियोंका बन्ध होता है । जैसे -- मिथ्यादृष्टि जीव ५ ज्ञानावरणको चारों गतियोंके साथ, उच्चागोत्रको मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा यशकिर्तिको नरकगतिके विना शेष ३ गतियोसे संयुक्त बांधता है । >

‘गतिस्वामित्वमें’->< विवक्षित प्रकृतियोंको बांधनेवाले कौन कौनसी गतियोंके जीव हैं, यह प्ररूपित किया गया है । जैसे-५ ज्ञानावरणको मिथ्यादृष्टिसे असंयत गुणस्थान तक चारों गतियोंके, संयतासंयत तिर्यच व मनुष्यगतिके, तथा प्रमत्तादि उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव बांधते हैं । >

‘अध्यानमें’->< विवक्षित प्रकृतिका बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक होता है, यह प्रकट किया गया है । जैसे -- ५ ज्ञानावरणका बन्ध मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान तक होता है । >

‘सादि बन्ध’->< विवक्षित प्रकृतिके बन्धका एक वार व्युच्छेद हो जानेपर जो उपशम श्रेणीसे भ्रष्ट हुए जीवके पुनः उसका बन्ध प्रारम्भ हो जाता है वह सादि बन्ध है । जैसे -- उपशान्तकषाय गुणस्थानसे भ्रष्ट होकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानावरणका बन्ध । >

‘अनादिबन्ध-->< विवक्षित कर्मके बन्धके व्युच्छित्तिस्थानको नहीं प्राप्त हुए जीवके जो उसका बन्ध होता है वह अनादि बन्ध कहा जाता है । जैसे -- अपने बन्धव्युच्छित्तिस्थान रूप सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानके अन्तिम समयसे नीचे सर्वत्र ५ ज्ञानावरणका बन्ध । >

### विषय-परिचय

‘ध्रुव बन्ध-->< अभव्य जीवोंके जो ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध होता है वह अनादि-अनन्त होनेसे ध्रुव बन्ध कहलाता है । >

‘ध्रुवबन्धी प्रकृतियां ४७ हैं-->< ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, १६ कषाय भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और ५ अन्तराय । >

‘अध्रुव बन्ध-->< भव्य जीवोंके जो कर्मबन्ध होता है वह विनश्वर होनेसे अध्रुव बन्ध है । >

‘अध्रुवबन्धी प्रकृतियां-->< ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७३ प्रकृतियां अध्रुवबन्धी हैं । >

< इनमें ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव चारों प्रकार तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध ही होता है । >

< उक्त व्यवस्थायें यथासम्भव आगेकी तालिकाओंमें स्पष्ट की गई हैं --- >

### ‘बन्धोदय-तालिका

संख्या	प्रकृति	स्वोदयबन्ध पी आदि	सान्तरबन्ध पी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किसगुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किसगुणस्था न तक	पृष्ठ
१-५	ज्ञानावरण ५	स्वो-बन्धी	निरन्तरबन्ध	१-१०	१-१२	७
६-९	चक्षुदर्शनावरणादि ४	स्वो-बन्धी	पी	१-१०	१-१२	७
१०-	निद्रा, प्रचला	स्व-परो.	निरन्तरबन्ध	१-८	१-१२	३५
११	निद्रानिद्रादि ३	स्व-परो.	पी	१-२	१-६	३०
१२-	सातावेदनीय	स्व-परो.	निरन्तरबन्ध	१-१३	१-१४	३८
१४	असातावेदनीय	स्व-परो.	पी	१-६	१-१४	४०

१५	मिथ्यात्व	स्वो.	निरन्तरबंध	१	१	४२
१६	अनन्तानुबन्धी ४	स्व-परो.	॥	१-२	१-२	३०
१७	अप्रत्याख्यानावरण ४	स्व-परो.	सा. निर.	१-४	१-४	४६
१८-	प्रत्याख्यानावरण ४	स्व-परो.	नि.	१-५	१-५	५०
२१	संज्वलनक्रोधादि ३	स्व-परो.	नि.	१-९	१-९	५२, ५५
२२-	संज्वलनलोभ	स्व-परो.	नि.	१-९	१-१०	५८
२५	हास्य, रति	स्व-परो.	नि.	१-८	१-८	९५
२६-	अरति, शोक	स्व-परो.	नि.	१-६	१-८	४०
२९	भय, जुगुप्सा	स्व-परो.	नि.	१-८	१-८	५९
३०-	नपुंसकवेद	स्व-परो.	नि.	१	१-९	४२
३२	स्त्रीवेद	स्व-परो.	सा.निर.	१-२	१-९	३०
३३	पुरुषवेद	स्व-परो.	सा.	१-९	१-९	५२
३४-	नारकायु	परो.	नि.	१	१-४	४२
३५	तिर्यगायु	स्व-परो.	सा.	१-२	१-५	३०
३६-	मनुष्यायु	स्व-परो.	सा.	१,२,४	१-१४	६१
३७	देवायु	परो.	सा.नि.	१-७	१-४	६४
३८-			नि.	(३ को छोड़)		
३९	नरकगति	परो.	नि.	१	१-४	४२
४०	तिर्यग्गति	स्व-परो.	नि.	१-२	१-५	३०
४१	मनुष्यगति	स्व-परो.	नि.	१-४	१-१४	४६
४२	देवगति	परो.	नि.	१-८	१-४	६६
४३	एकेन्द्रियादि ४ जाति	स्व-परो.	सा.	१	१	४२
४४	पंचेन्द्रिय जाति	स्व-परो.	सा.नि.	१-८	१-१४	६६
४५	औदारिकशरीर	स्व-परो.	सा.नि.	१-४	१-१३	४६
४६	वैक्रियिकशरीर	परो.	सा.नि.	१-८	१-४	६६
	आहारकशरीर	परो.	सा.	७-८	६	७१

४७	तैजसशरीर	स्वो.	सा.नि.	१-८	१-१३	६६
४८	कार्मणशरीर	स्वो.	सा.नि.	१-८	१-१३	६६
४९	औदारिकअंगोपांग	स्व.परो.	सा.नि.	१-४	१-१३	४६
५०	वैक्रियिकअंगोपांग	परो.	नि.	१-८	१-४	६६
५१-	आहारकअंगोपांग	परो.	नि.	७-८	६	७१
५४	निर्माण	स्वो.	नि.	१-८	१-१३	६६
५५	समचतुरस्रसंस्थान	स्व-परो.	सा.नि.	१-८	१-१३	६६
५६			सा.नि.			
५७			नि.			
५८			नि.			
५९			सा.नि.			
६०						
६१						
६२						
६३						
६४						
६५						

षट्खण्डागमकी प्रस्तावना

संख्या	प्रकृति	स्वोदयबन्ध ी आदि	सान्तरबन्ध ी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किसगुणस्था न तक	उदय किस गुणस्थानसे किसगुणस्थ ान तक	पृष्ठ
६६	न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थ	स्व.-परो.	सा.	१-२	१-१३	३०
६७	ान		सा.	१-२	१-१३	३०
६८	स्वातिसंस्थान	स्व.-परो.	सा.	१-२	१-१३	३०

६९	कुब्जकसंस्थान		सा.	१-२	१-१३	३०
७०	वामनसंस्थान	स्व.-परो.	सा.	१	१-१३	४२
७१	हुण्डकसंस्थान		सा.नि.	१-४	१-१३	४६
७२	वज्रवृषभनाराचसंहनन	स्व.-परो.	सा.	१-२	१-११	३०
७३	वज्रनाराचसंहनन		सा.	१-२	१-११	३०
७४	नाराचसंहनन	स्व.-परो.	सा.	१-२	१-७	३०
७५	अर्धनाराचसंहनन		सा.	१-२	१-७	३०
७६	कीलितसंहनन	स्व.-परो.	सा.	१	१-७	४२
७७	असंप्राप्तसृपाटिकासंह		नि.	१-८	१-१३	६६
७८	नन	स्व.-परो.	नि.	१-८	१-१३	६६
७९	स्पर्श		नि.	१-८	१-१३	६६
८०	रस	स्व.-परो.	नि.	१-८	१-१३	६६
८१	गन्ध		सा.	१	१,२,४	४२
८२	वर्ण	स्व.-परो.	सा. नि.	१-२	१,२,४	३०
८३	नरकगत्यानुपूर्वी		सा. नि.	१-४	१,२,४	४६
८४	तिर्यग्गत्यानुपूर्वी	स्व.-परो.	सा. नि.	१-८	१,२,४	६६
८५	मनुष्यगत्यानुपूर्वी		नि.	१-८	१-१३	६६
८६	देवगत्यानुपूर्वी	स्व.-परो.	नि.	१-८	१-१३	६६
८७	अगुरुलघु		सा. नि.	१-८	१-१३	६६
८८	उपघात	स्वो.	सा.	१	१	४२
८९	परघात	स्वो.	सा.	१-२	१-५	३०
९०	आताप	स्वो.	सा. नि.	१-८	१-१३	६६
९१	उद्योत	स्वो.	सा.	१-८	१-१३	६६
९२	उच्छ्वास	परो.	सा.	१-२	१-१३	३०
९३	प्रशस्तविहायोगति	स्व.-परो.	सा. नि.	१-८	१-१३	६६
९४	अप्रशस्तविहायोगति		सा.	१	१	४२



		स्व.-परो.				
		स्व.-परो.				
		स्व.-परो.				
		स्व.-परो.				
		स्वो.				
		स्वो.				
		स्व.-परो.				
		स्व.-परो.				

संख्या	प्रकृति	स्वोदयबन्ध ी आदि	सान्तरबन्ध ी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किसगुणस्था न तक	उदय किस गुणस्थानसे किसगुणस्थ ान तक	पृष्ठ
१०५	पर्याप्त	स्व.-परो.	सा. नि.	१-८	१-१४	६६
१०६	अपर्याप्त		सा.	१	१	४२
१०७	स्थिर	स्व.-परो.	सा. नि.	१-८	१-१३	६६
१०८	अस्थिर		सा.	१-६	१-१३	४०
१०९	आदेय	स्वो.	सा. नि.	१-८	१-१४	६६
११०	अनादेय	स्वो.	सा.	१-२	१-४	३०
१११	यशकीर्ति	स्व.-परो.	सा. नि.	१-१०	१-१४	७
११२	अयशकीर्ति		सा.	१-६	१-४	४०
११३	तीर्थकर	स्व.-परो.	नि.	४-८	१३-१४	७३
११४	उच्चगोत्र		सा. नि.	१-१०	१-१४	७
११५	नीचगोत्र	स्व.-परो.	सा. नि.	१-२	१-५	३०
११६- २०	अन्तराय ५	स्व.-परो.  परो. स्व.-परो.  स्व.-परो.  स्वो.	नि.	१-१०	१-१२	७

प्रत्यय-तालिका ( पृ. १९-२४ )

गुणस्थान	मिथ्यात्व	अविरति	कषाय	योग	समस्त
	५	१२	२५	१५	५७
मिथ्यात्व	५	१२	२५	१३	५५
सासादन	-	१२	२५	१०	५०
मिश्र	-	१२	२१	१३	४३
असंयत	-	१२	रहित	१३	४६
देशसंयत	-	११	अनन्तानुबंधिचतुष्कसे	९	४६
प्रमत्त	-	असं-यम	रहित	१३	३७
अप्रमत्त	-	रहित	१७	११	२४
अपूर्वकरण	-	-	अप्रत्याख्यानचतुष्कसे	आहारद्विकसे सहित	२४
अनिवृत्ति-करण भा.	-	-	रहित	उपर्युक्त	२२
१	-	-	प्रत्याख्यानचतुष्कसे रहित	९	२२
	-	-	७	९	२२
	-	-	नोकषाय ६ से हीन	आहारद्विकसे रहित	१६
	-	-		उपर्युक्त	१५
	-	-		९	१५

भा. २		-	६ नपुंसकवेदसे हीन	आहारद्विकसे रहित उपर्युक्त	
-------	--	---	----------------------	-------------------------------	--

गुणस्थान	मिथ्यात्व	अविरति	कषाय	योग	समस्त
	५	१२	२५	१५	५७
अनिवृत्ति- करण भा. ३	-	-	५ स्त्रीवेदसे हीन	९ आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
भा. ४	-	-	४ पुरुषवेदसे हीन	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
भा. ५	-	-	३ संज्वलनक्रोधसे हीन	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
भा. ६	-	-	२ संज्वलनमानसे हीन	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	

भा. ७	-	-	१ संज्वलनमायासे हीन	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
सूक्ष्मसाम्प- राय	-	-	१ संज्वलनमायासे हीन	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
उपशान्त- कषाय	-	-	-	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
क्षीणमोह	-	-	-	आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि व कार्मणसे रहित	
सयोग- केवली	-	-	-	७ सत्य व अनुभय मन और वचन, औ. द्विक, कार्मण	
अयोग- केवली	-	-	-	-	